UGC NTA NET हिन्दी साहित्य

साहित्य शास्त्र (अलंकार सिध्दांत)

ईकाई - 3 भाग -5

Jyoti(Hindi Educator)

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast

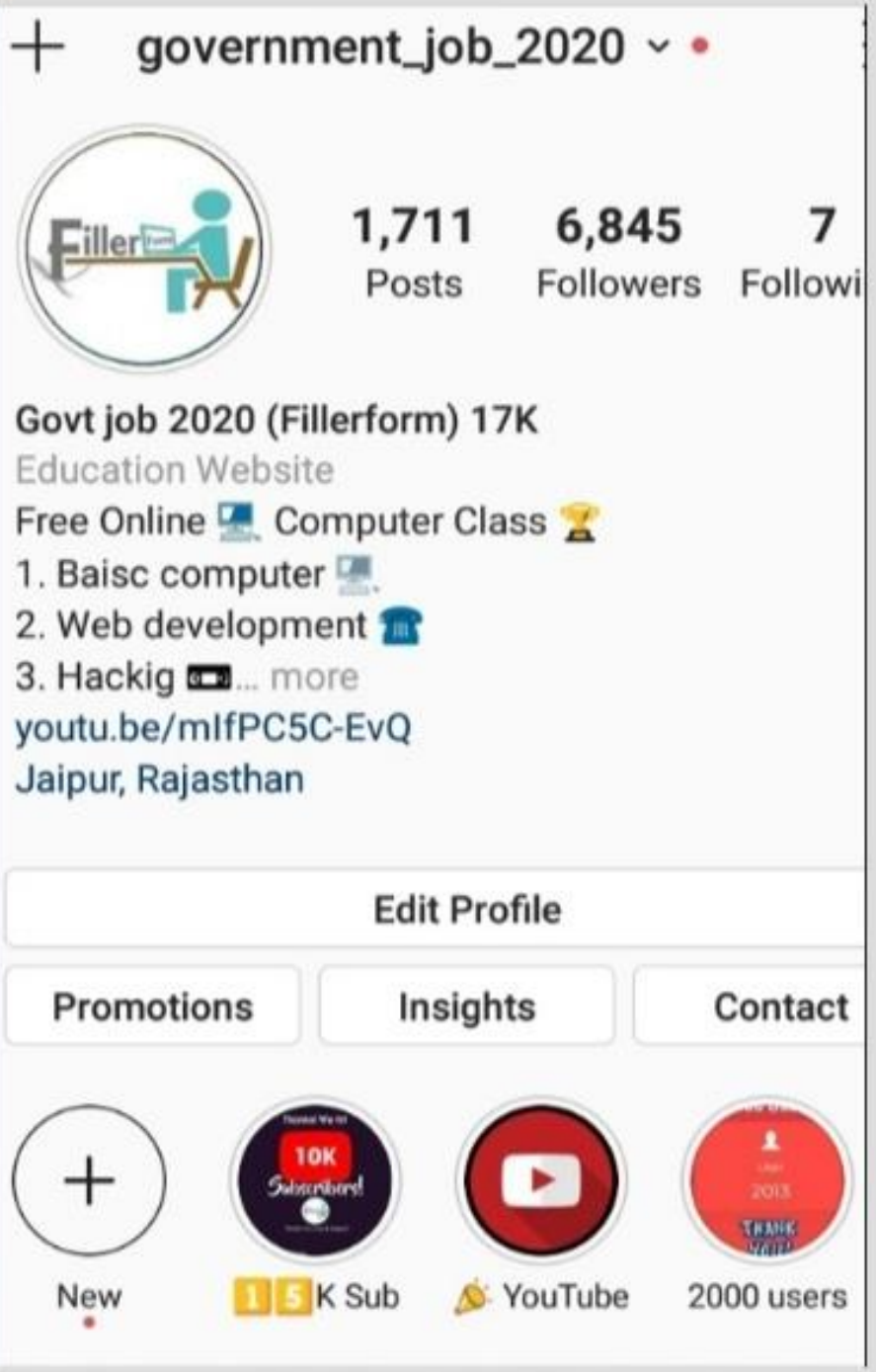
government_job_2020
1,711
Posts
6,845
Followers
7
Followi
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
15K Sub
YouTube
2000 users

UGC-NET 2022

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

04:00 PM
Political sciences

06:00 PM
Sanskrti

08:00 PM
Computer Sce.

09:00 PM
Management

JANUARY
17

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

UGC-NET 2022

09:00 AM
Current GK

11:00 AM
1st Paper

02:00 PM
1st Paper

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

09:00 PM
Management

January
10

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

5000+MCQ+PYQ

Free Books

100% OFF

fillerform

8209837844

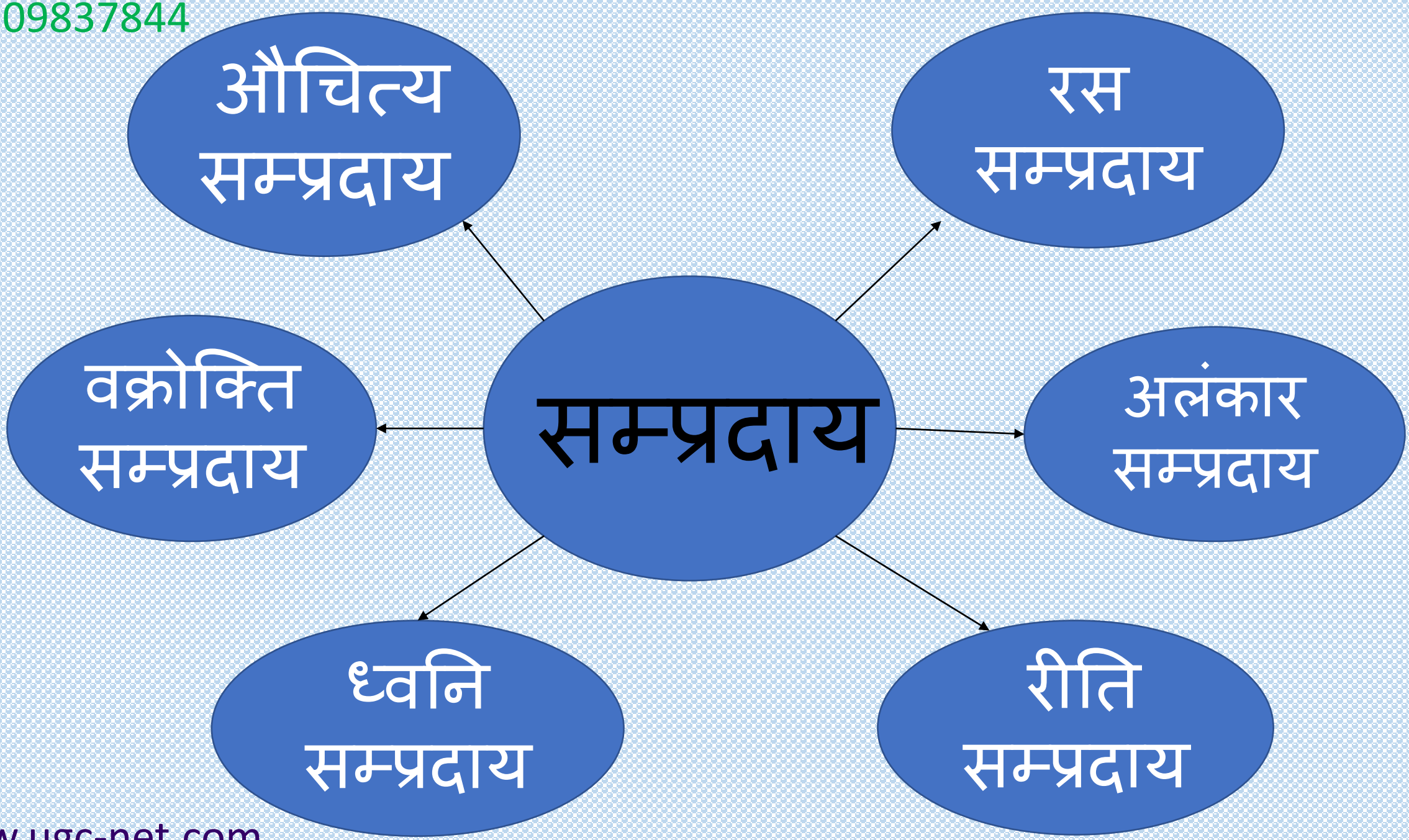

www.ugc-net.com

8209837844

www.ugc-net.com

अलंकार-संप्रदाय

8209837844

अलंकार का अर्थ

www.ugc-net.com

अलंकार का अर्थ: भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा में रस के बाद दूसरा महत्त्वपूर्ण संप्रदाय 'अलंकार-संप्रदाय है। अलंकार का सामान्य अर्थ है- 'आभूषण अलंकार-सिध्दांत का प्रवर्तक भामह (छठी शती ई.) को माना जाता है जिनका प्रसिध्द ग्रन्थ काव्यालंकार है। भामह का अनुसरण दण्डी ने किया। फिर भामह और दण्डी दोनों का उद्‌भट ने। इन तीनों आचार्यों के अतिरिक्त रूय्यक, रीतिवादी आचार्य वामन, वक्रोक्तिवादी कुन्तक, इसी तरह किसी न किसी रूप में मम्मट, जयदेव, आचार्य केशव (हिंदी) इत्यादि प्रमुख आचार्यों ने अलंकार को काव्य का एक आवश्यक तत्व स्वीकार किया

काव्य या साहित्य में सौंदर्य का समावेश करने वाला तत्व ही अलंकार है

- अलंकार संप्रदाय की स्थापना का श्रेय काव्यालंकार के रचयिता भामह को जाता है
- अलंकार सम्प्रदाय के पोषक भामह के टिकाकर उद्‌भट माने जाते हैं
- प्रमुख अनुयायी - दंडी, रुद्रट, जयदेव, अप्पय दीक्षित, प्रतिहारेंदुराज काव्य की आत्मा माना है

8209837844
www.ugc-net.com

अलंकारवादी आचार्य व उनकी अलंकार-संबंधी स्थापनाएँ व मान्यताएँ

(1) भरत मुनि — **आचार्य भरत ने अपनी रचना 'नाट्यशास्त्र' में उपमा, रूपक, दीपक और यमक चार अलंकारों का प्रयोग किया है |**

वह मूलतः रसवादी आचार्य थे ; अतः उन्होंने अलंकारों का प्रयोग रस पर आश्रित माना

(2) भामह — भामह (छठी सदी) को अलंकार सिद्धांत का प्रवर्तक माना जाता है | उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'काव्यालंकार' में अलंकार सिद्धांत का प्रतिपादन किया | भामह ने अलंकार को काव्य का अनिवार्य तत्व माना है | उन्होंने 37 अलंकारों का निरूपण किया | भामह के अनुसार — "शब्द तथा अर्थ की वक्रतामय उक्ति ही अलंकार है |

(3) उद्भट — आचार्य दंडी के पश्चात आचार्य उद्भट (नौवीं सदी) ने अलंकारों के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए | उद्भट ने अपने ग्रंथ 'काव्यालंकार सार संग्रह' में भामह और दंडी के विचारों का समन्वय प्रस्तुत किया | उन्होंने गुण और अलंकार दोनों को समान रूप से सौंदर्य के कारक माना | पुनः उन्होंने श्रृंगार रस के उदय की स्थिति में गुण तथा अलंकार को रसवत अलंकार में मिला दिया |

8209837844
www.ugc-net.com

(4) दण्डी — अलंकार संप्रदाय के दूसरे महान समर्थक आचार्य दंडी हैं | भामह ने जहाँ शब्द और अर्थ के सहित भाव को काव्य मानकर शब्दालंकारों और अर्थालंकारों को समान महत्व प्रदान दिया है वहीं दंडी ने 'इष्टार्थमयी पदावली' को काव्य कहकर केवल शब्द को महत्व दिया है |

(5) रुद्रट — रूद्रट भी अलंकारवादी आचार्य थे | इन्होंने अपने ग्रंथ 'काव्यालंकार' में अलंकारों को महत्व प्रदान करते हुए कहा कि अलंकार शब्द और अर्थ को शोभा प्रदान करते हैं | अलंकार की परिभाषा देते हुए वे कहते हैं — "कवि प्रतिभा से उद्भूत अभिधान या कथन विशेष का नाम अलंकार है |"रुद्रट ने काव्य में रस और अलंकार दोनों को पृथक तथा स्वतंत्र मानते हुए दोनों को समान महत्व प्रदान किया |

(6) वामन - वामन मूलत: गुणवादी आचार्य हैं | उन्होंने रीति सिद्धांत का प्रवर्तन किया | लेकिन फिर भी काव्य में अलंकारों को महत्व प्रदान करते हुए उन्होंने कहा कि 'अलंकार एव काव्यम्' अर्थात अलंकार ही काव्य है |वामन ने अलंकार शब्द का अर्थ 'सौंदर्य' माना है | काव्य में यह सौंदर्य दोषों के त्याग तथा गुणों व अलंकारों के ग्रहण से उत्पन्न होता है |

8209837844 www.ugc-net.com

कुंतक - वक्रोक्ति प्रवर्तक, अलंकार के विस्तार को महत्व नहीं दिया | अलंकार की सख्या 20 बतायी है|

मम्मट — आचार्य मम्मट ने अपनी रचना 'काव्यप्रकाश' में अलंकारों की अनिवार्यता का खंडन करते हुए कहा है — "तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि | अर्थात् निर्दोष, गुण-युक्त, अलंकार-युक्त या अलंकार-रहित शब्दार्थ काव्य है |" इस प्रकार आचार्य मम्मट ने काव्य में अलंकार-प्रयोग को सर्वथा ऐच्छिक बना दिया |

8209837844

www.ugc-net.com

सार तत्व

अलंकार संप्रदाय प्रवर्तक - भामह
अलंकार का पोषक - उद्भट
अलंकार के अन्य आचार्य
शोभाकर मित्र (अलंकार रत्नाकर) हेमचंद्र (काव्यानुशासन)
जयदेव (चंद्रलोक)
विद्याधर (एकावली)
विद्यानाथ (प्रताप रूपपशोभूषण) विश्वनाथ (साहित्यदर्पण)
अप्प दीक्षित (कुवलयानंद)
विश्वेर पंडित (अलंकार कोस्तुभ)
पंडित जगन्नाथ (रस गंगाधर)

8209837844

आधुनिककालीन विद्वानों के अलंकार विषयक मत

अनेक आधुनिक विद्वानों ने भी अलंकारों के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं | कुछ आधुनिक विद्वानों के कथन विशेष उल्लेखनीय हैं जिनमें से कुछ का वर्णन इस प्रकार है –

(1) आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार – "भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप-गुण और क्रिया का तीव्र अनुभव कराने में कभी-कभी सहायक होने वाली युक्ति की अलंकार है |"'कभी-कभी' शब्दों के प्रयोग से लगता है कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल अलंकारों को महत्वपूर्ण मानते हुए भी काव्य का अनिवार्य तत्व नहीं मानते थे |

(2) डॉ श्यामसुंदर दास के अनुसार – "जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा को बढ़ाते हैं उसी प्रकार अलंकार भाषा के सौंदर्य में वृद्धि करते हैं |"

(3) सुमित्रानंदन पंत अलंकारों को केवल सौंदर्यवर्धक न मानकर भाव के साथ जोड़ते हैं – "अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं |"अपनी एक कविता में वे कहते हैं –"तुम वहन करो जनमन में मेरे विचार |वाणी मेरी क्या तुम्हें चाहिए अलंकार |"

(4) रामधारी सिंह दिनकर जी अलंकारों के विषय में कहते हैं – "मैं अलंकारों के महत्व को भूल नहीं सकता, किसी प्रकार भी उनका अनादर नहीं कर सकता क्योंकि अलंकारों ने काव्य-कौशल के बहुत से ऐसे भेद खोले हैं जो अन्यथा अविश्लिष्ट रह जाते |"

www.ugc-net.com

8209837844

www.ugc-net.com

हिंदी के रीतिकालीन आचार्य

हिंदी के रीतिकालीन आचार्यहिंदी के रीतिकालीन आचार्यों ने भी अलंकारों को महत्व प्रदान किया है परंतु इन कवियों के विचार प्रायः संस्कृत आचार्यों का अनुकरण मात्र प्रतीत होते हैं | रीतिकालीन कवियों का काव्य में अलंकारों के प्रति एक विशेष मोह था | यही कारण है कि रीतिकाल में अनेक नए अलंकारों की उद्भावना हुई

(1) केशवदास ने अलंकारों के महत्व को उजागर करते हुए कहा है —"भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित |"

(2) कवि देव भी अलंकारों को महत्व देते हुए कहते हैं — "कविता कामिनी अलंकार पहिने अद्भुत रूप लखावति |

(3) कवि दूलह भी केशवदास की भाँति मानते हैं कि बिना अलंकारों के कविता शोभा नहीं पाती —

"बिन भूषन नहीं भूषई कविता |"

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

अलंकार, रीति, वक्रोक्ति देहवाली सम्प्रदाय है या ध्वनि आत्मवादी सम्प्रदाय |
भरतमुनि ने अलंकार की परिभाषा नहीं दी परन्तु चार अलंकार का निरुपण किया - उपमा, रूपक, दीपक, यमक |
महिमभट्ट ने अलंकार के लिए चारुत्व शब्द का प्रयोग किया और शब्दार्थ की विच्छिति को भी अलंकार कहा |
राजशेखर ने अलंकार को रस का उपकारक माना |
हेमचंद्र ने अलंकार को अंगश्रित माना |

अलंकार संप्रदाय के विरोधी आचार्य :-

आनंदवर्धन- इन्होंने अलंकार को आभूषण माना |
मम्मट- अलंकार की महत्ता अस्वीकार की |
विश्वनाथ - अलंकार को भूषण मन |

FEEDBACK

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

/Fillerform

info@fillerform.com